चौधरी चरण सिंह

23.12.1902 : 29.05.1987

(कृपया इसका प्रिंट निकलवा कर पढ़ें और पढ़वाएं)

आभार : मूल लेखक : दयाराम, विक्रम सिंह पवार
(मूलनिवासी बहुजनों के एक और कोहिनूर चौ. चरण सिंह)
सुगत सांस्कृतिक, शैक्षिक एवं सामाजिक संस्था,
लखनऊ (उ.प्र.) : 23.12.2020
अभिनेत्री : अनामिका सिंह
लेखक : ए के सिंह
मोबा : 7355175480

बंधुओं : जय संविधान, जय विज्ञान, जय लोकतंत्र, जय भारत, नमो बुद्धाय, जय भीम, जय अर्जक...

स्वतंत्रता से पूर्व भारत रियासतों में बंटा हुआ था। रियासतों के मुखिया राजा हुआ करते थे। जो अपनी रियासतों के विस्तार के लिए हमेशा लड़ते झगड़ते रहते थे। जिसका फायदा उठाकर मुगलों और अंग्रेजों ने भारत पर लंबे समय तक शासन किया। वल्लभगढ़ रियासत के राजा नाहर सिंह थे। उनके वंशजों के साथ चौधरी चरण सिंह के दादा बादाम सिंह के अच्छे संबंध थे। राजा नाहर सिंह ने जब अंग्रेजों की अधीनता स्वीकार नहीं की, तो अंग्रेजों ने बंदी बनाकर उन्हें फांसी दे दी तथा उनके समर्थकों पर घोर अत्याचार करना शुरू कर दिया। उनके बहुत से समर्थकों ने बल्लभगढ़ रियासत छोड़कर बुलंदशहर, उत्तर प्रदेश के गांव की तरफ कूच किया। चौधरी बादाम सिंह के 5 पुत्र थे : लखपत सिंह, बूटा सिंह, गोपाल सिंह, रघुवीर सिंह तथा सबसे छोटे थे चौधरी मीर सिंह। चौधरी मीर सिंह 18 वर्ष की आयु में अपने भाइयों के साथ बुलंदशहर छोड़कर मेरठ के गांव नूरपुर पहुंचे। वहां पहुंचकर उन्होंने कुछ जमीन बटाई पर ली और बंजर भूमि पर ही एक झोपड़ी डाली। उसी बंजर भूमि पर एक कुआं खोदा और धीरे-धीरे सभी भाइयों ने अपनी अपनी झोपड़ी बना ली। और अथक परिश्रम से बंजर भूमि को उपजाऊ बनाया। बच्चों की खातिर ही दादा बादाम सिंह के पुत्रों को खानाबदोश जैसी जिंदगी जीनी पड़ी। वे नूरपुर से जानी खुर्द गाजियाबाद के भदोला में भी रहे। सभी भाइयों ने कड़ी मेहनत कर कुछ रुपए बचाए और कुछ बीघा जमीन भी खरीदी।

उस समय अछूतों और पिछड़ों को शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार नहीं था। जिसके कारण बादाम सिंह के सारे पुत्र अनपढ़ थे। भाइयों में गहरा प्रेम था। लखपत सिंह परिवार में सबसे बड़े थे। इसलिए सभी भाई उनका बहुत सम्मान करते थे। चौधरी मीर सिंह का विवाह नेत्र कौर के साथ हुआ, जो बहुत सुशील महिला थीं। वह अपनी सभी जेठानियों के साथ मधुरता का व्यवहार रखती थीं। उन्होंने 3 पुत्र और दो पुत्रियों को जन्म दिया। पुत्रों में सबसे बड़े थे : चौधरी चरण सिंह, मजले चौधरी श्याम सिंह और सबसे छोटे थे चौधरी मान सिंह। पुत्रियों के नाम थे, राम देवी और रिशालो देवी।

23 दिसंबर 1902 को मेरठ के नूरपुर गांव में उस झोपड़ी में चरण सिंह का जन्म हुआ, जिसमें उनके पिता रह रहे थे। चौधरी चरण सिंह का बचपन नूरपुर गांव में बीता और शैशव-काल झोपड़ी में, जहां कोई स्कूल नहीं था। भूपगढ़ी अब स्थाई निवास बन गया था। सहमति बनाकर बालक चरण सिंह को जानी गांव की प्राथमिक पाठशाला में भर्ती करा दिया, उस समय बालक चरण सिंह की उम्र 7 साल थी। अब मीर सिंह का शरणार्थी जीवन लगभग समाप्त हो गया था। जब और बच्चे खेलते थे तो बालक चरण सिंह किताबों में खोए रहते थे। 1923 में आगरा कॉलेज से उन्होंने B.Sc. की। और इसी आगरा कॉलेज से उन्होंने M.A. किया। इसी दौरान आर्यसमाज का बड़ा जलसा मथुरा में चल रहा था। जिसमें दूर-दूर से भारी संख्या में युवक युवतियां भी सम्मिलित हुए। एक सुंदर सी लड़की कार्यक्रम स्थल पर जमीन को गोबर से लिप रही थी। चरण सिंह ने उस जलसे में भाग लिया। चरण सिंह अपने मित्रों के साथ स्वयंसेवक की ड्यूटी कर रहे थे। वह लड़की दूसरी तरफ जब एक चूल्हा बना कर खाना पका रही थी, कि चरण सिंह ने आव देखा ना ताव, गोबर से लिपी जमीन पर जूता पहने चल गए। इतने में उस लड़की ने डांट लगाई। चरण सिंह ठहर गए, किंतु लड़की पर अपनी नजरें गड़ा दी। उन्हें क्या पता था कि यह लड़की भविष्य में उनकी जीवन संगिनी बनेगी।

सोनीपत घड़ीकुंडलवाली गांव की गायत्री देवी ने चरण सिंह को डांट जरूर लगाई थी, किंतु गायत्री के मन में भी कुछ कुछ होने लगा था। गायत्री देवी का परिवार आर्यसमाजी था। गायत्री देवी ने जालंधर कन्या महाविद्यालय से स्नातक की परीक्षा पास की थी, उसके बाद पढ़ाई छोड़ दी। परिवार संपन्न था। उस समय बेटी को अधिक पढ़ाना उचित नहीं समझा जाता था। पुत्री की बढ़ती उम्र के साथ दादा की चिंता बढ़ने लगी। उन्होंने गायत्री देवी के हाथ पीले करने के लिए लड़का देखने की चर्चा शुरू कर दी। उन्हीं के परिवार का एक लड़का

आगरा कॉलेज में पढ़ता था, उसकी मुलाकात अचानक चरण सिंह से हो गई। दादा ने पूछा कि तुमने कोई लड़का देखा क्या? तो उसने चरण सिंह का नाम बताया। मेधावी चरण सिंह का नाम सुनते ही दादा ने उसके परिवार के रहन-सहन एवं जर जमीन की जांच पड़ताल शुरू कर दी। दादा गांव लौटकर भदोला पहुंचे। चरण सिंह को देखने के बाद जैसे उन्हें कुछ पूछने की जरूरत ही महसूस नहीं हुई। घर पहुंचकर दादा ने कहा लड़का तो खरा सोना है। उच्च शिक्षा प्राप्त और बेहद सुंदर है, किंतु घर से गरीब है। रहने के लिए कमरा भी नहीं, केवल एक छप्पर है। परिजनों ने पूछा : फिर क्या गायत्री छप्पर में रहेगी? दादा ने कहा देख लो भाई, ऐसा छोरा तो मैंने नहीं देखा। परिवार-जनों को क्या मालूम था, कि चरण सिंह कीचड़ से पुष्पित कमल है। इसकी सुगंध यत्र तत्र सर्वत्र फैल जाएगी। अंत में परिवारजनों ने दादा के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। भदोला खबर पहुंचा दी, कि उन्हें लड़का पसंद है वह आकर लड़की देख जायें। मीर सिंह अपने भाइयों के साथ गांव घड़ीकुंडलवाली पहुंचे। झुग्गी झोपड़ी में गुजर-बसर करने वाले मीर सिंह लड़की वालों का घर देखा, तो चकित रह गये। उस समय लड़की को आमने-सामने बैठाकर दिखाने का प्रचलन नहीं था। अतः यह तय किया गया कि, चौधरी मीर सिंह और उनके भाई कुए के पास वाले घर में बैठ जाएं। जब गायत्री उस कुएं से पानी लाएगी, उसे उसी समय देखा जा सकता है। ऐसा ही किया गया और उनके भाई एक बार नहीं तीन-तीन बार लड़की को देखा, और कमरे से बाहर निकलकर लड़की के दादा के पास आए और उन्हें अपनी स्वीकृति दे दी।

5 जून 1925 को चौधरी चरण सिंह गायत्री देवी के साथ प्रीत की डोरी में बंध गए। उन्होंने अपनी शिक्षा जारी रखी और 1926 में आगरा विश्वविद्यालय से एलएलबी की डिग्री प्राप्त की। उन दिनों में जब अंग्रेज शासक थे, तब भी शूद्रों अर्थात् SC/ST/OBC पर आर्यब्राह्मणी सामाजिक व्यवस्था का गहरा प्रभाव था। जिसकी वजह से मूलनिवासी बहुजन समाज के लोग शिक्षा ग्रहण नहीं कर सकते थे। मैकाले की शिक्षा नीति 1835 में घोषित हुई। जिसके कारण देश के सभी नागरिकों को शिक्षा ग्रहण करने का अवसर प्राप्त हुआ। राष्ट्रपिता ज्योतिबा फुले, पेरियार रामास्वामी नायकर, चौधरी सर छोटूराम, डॉक्टर अंबेडकर आदि के लिए मैकाले की शिक्षा नीति वरदान सिद्ध हुई। चौधरी चरण सिंह भी उन्हीं में से एक थे, जिन्होंने उच्च शिक्षा प्राप्त की। उच्च शिक्षा का महत्व समझाते हुए अंबेडकर ने उस समय कहा था : जब ब्रिटिश सरकार ने अछूतों को बेहतर जीवन प्रदान करने के लिए ₹300000 प्रदान किया था, तब लोगों ने अछूतों के उत्थान के लिए डॉक्टर अंबेडकर को ढेर सारे सुझाव दिए। कुछ लोगों का सुझाव था कि डॉक्टर अंबेडकर अछूतों के लिए जगह-

जगह भव्य भवनों का निर्माण करें। किंतु अंबेडकर ने उनके सुझाव को नकारते हुए कहा था, भव्य भवन से भव्य ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकती। बल्कि भव्य ज्ञान से भव्य भवन की प्राप्ति हो सकती है।

चौधरी चरण सिंह के घर में 5 पुत्रियां और एक पुत्र ने जन्म लिया। चौधरी साहब के एकमात्र पुत्र हैं चौधरी अजीत सिंह, जिनका विवाह सुश्री राधिका के साथ हुआ। इनके घर में एक पुत्र और दो कन्याओं ने जन्म लिया। पुत्र का नाम है चौधरी जयंत सिंह और पुत्रियां हैं, निधि और दीप्ति। चौधरी साहब में निसंदेह आर्य समाज की उन मान्यताओं को स्वीकार किया।जिसमें समाज हित था। उन्होंने अपने साहित्य संपदा में स्वामी दयानंद सरस्वती और गांधी का जिक्र भी किया। किंतु उनके आदर्श तो कबीर थे। लेखक और साहित्यकारों ने राष्ट्रपिता फुले के सत्यशोधक समाज को भारतीयों के सामने उजागर नहीं किया और न ही उनकी लिखी पुस्तक गुलामगिरी की धारणाओं को ही समाज के सामने प्रस्तुत किया। जो आर्यसमाज कबीर और इस्लाम का विरोधी रहा हो, भला चौधरी चरण सिंह को वे आर्य समाजी कैसे स्वीकार कर सकते थे। उच्च शिक्षा प्राप्त चौधरी चरण सिंह का मुसलमानों से गहरा लगाव इसलिए नहीं था कि उनसे कोई स्वार्थ था या उनके वोट के कारणों से। बल्कि चौधरी चरण सिंह भारतीय इतिहास से भली प्रकार परिचित थे। स्वतंत्रता संग्राम में मुसलमानों का बहुत बड़ा योगदान रहा। 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में 85 लोगों को मेरठ में फांसी दी गई थी, जिसमें अधिकतर मुसलमान थे। इस बात से भी भली भांति परिचित थे, कि जो लोगों धर्म परिवर्तन कर मुसलमान बने, उसका कारण आर्य ब्राह्मणों द्वारा निर्मित जाति व्यवस्था थी। चौधरी चरण सिंह को प्रचार माध्यमों ने जातिवादी घोषित कर दिया। उनके जातिवादी होने का प्रचार-प्रसार इतना अधिक किया गया, कि चौधरी चरण सिंह लोगों के दिल और दिमाग से ओझल होने लगे।

चौधरी चरण सिंह, उस समय जब शासन प्रशासन में और राजनीतिक सत्ता में सवर्णों का ही दबदबा रहा, तब भी कांग्रेस के कंधों पर चढ़कर, अपने मूलनिवासी बहुजन समाज के लिए बिना किसी समझौते के, बिना अपना जमीर बेचे, कार्य किया। चाहे उन्हें मुख्यमंत्री, राजस्व मंत्री, केंद्रीय गृह मंत्री तथा प्रधानमंत्री पद से इस्तीफा ही क्यों ना देना पड़ा हो। ऐसे मूलनिवासी बहुजनों के कोहिनूर चौधरी चरण सिंह की चमक इतिहास के पन्नों में रहेगी, जिसका व्यक्तित्व और कृतित्व देशवासियों के लिए हमेशा प्रेरणा का स्रोत बना रहेगा।

चौधरी चरण सिंह गाजियाबाद में रह रहे थे, घर में जगह कम पड़ने की वजह से, वे स्थाई रूप से मेरठ आ गए। चौधरी चरण सिंह का रसोईया मानसिंह अनपढ़ था, और जाति से चमार था। चौधरी चरण सिंह का अछूत रसोइए से कितना लगाव था। "कि जब गाजियाबाद से मेरठ चलने की बात हुई, तो अछूत रसोईया उदास हो गया। बड़ी बेटी ने पिता से कहा, रसोईया बहुत दुखी है।" चौधरी चरण सिंह ने तुरंत टोका, "बेटी रसोईया नहीं, यह तुम्हारे चाचा हैं। चाचा कहा करो।" उन्होंने रसोईया को बुलाया, "क्यों भई, क्या बात है, मेरे साथ मेरठ चलना चाहते हो। अच्छा तो ठीक है, तैयार हो जाओ"। बाद में वह रसोईया परिवार का सदस्य बन गया। उसके बच्चों की सरकारी नौकरी लगवाने में उन्होंने पूर्ण सहायता की। तथा मानसिंह के छोटे भाई को दान में कई एकड़ जमीन भी दी। तथा उनके बेटों की तरह, भाई के बेटों को भी नौकरी लगवाने में सहायता की।

चौधरी चरण सिंह के आदर्श कबीर थे। इसलिए अंधविश्वास, पाखंड, चमत्कार में उनकी आस्था नहीं थी। जाति प्रथा के घोर विरोधी थे। गांधीजी के अछूतोद्धार का नाटक चल रहा था। जिसे डॉक्टर अंबेडकर और सर छोटूराम चुनौती दे रहे थे। एक बार पढ़ाई करते समय छात्रावास में छुआछूत के कलंक को मिटाने में बहस छिड़ गई। चौधरी चरण सिंह ने तुरंत भंगी के हांथ से बनवा कर खाना खाया। बस फिर क्या था? पूरे कालेज और छात्रावास में तूफान आ गया जाट के छोरे ने भंगी से खाना बनवा कर खा लिया। हरफनमौला चरण सिंह में फक्कड़ कबीर की अकड़ ने जैसे प्रवेश ले लिया था।

सुरेश राणा (गुर्जर) : मैंने बचपन से ही चौधरी चरण सिंह को अपने स्वाभाविक नेता के रूप में देखा है। मेरे गांव जसाला (शामली) से उनका विशेष नाता रहा। गुर्जर जाति के प्रति उनका स्नेह और विश्वास इस तथ्य से साबित होता है, कि मेरे गांव को 10 बार उत्तर प्रदेश विधानसभा से उनके दल का प्रतिनिधित्व करने का सुअवसर मिला। यद्यपि मेरे विधानसभा में जाट मतदाताओं की संख्या गुर्जर मतदाताओं से बहुत अधिक है। जाट-गुर्जर एकता का आरंभ 1967 में हुआ। जब संयुक्त विधायक दल की उत्तर प्रदेश में सरकार बनने से पहले मुख्यमंत्री पद के लिए चौधरी चरण सिंह और गुर्जर नेता रामचंद्र विकल के नाम सामने आए। चौधरी चरण सिंह 17 विधायकों के साथ कांग्रेस छोड़कर अलग हो गए थे। और विकल जी उस समय किसान मजदूर पार्टी और संयुक्त विधायक दल के नेता थे। परंतु विकल जी चौधरी साहब की शैक्षणिक योग्यता, प्रशासनिक अनुभव, विस्तृत समझ और उनके ग्रामीण विकासोन्मुख का सम्मान करते हुए स्वयं मुख्यमंत्री पद के लिए उन्हीं

का नाम प्रस्तावित किया और उनके मंत्रिमंडल में वह वह उप मुख्यमंत्री बने। इसी एकता से आगे चलकर गुर्जर राजनीति काफी सफल हुई।

चौधरी चरण सिंह जाति प्रथा के घोर विरोधी थे। वे इसके विरोध में किसी भी सीमा तक जा सकते थे। यह उनके 1967 के मुख्यमंत्रित्व काल में जारी आदेश से प्रमाणित होता है। जब उन्होंने शासकीय आदेश पारित किया, कि जो संस्थाएं किसी जाति विशेष के नाम से चल रही हैं, उनका शासकीय अनुदान बंद कर दिया जाएगा। परिणाम स्वरूप इस आदेश के तत्काल बाद ही कॉलेजों के नाम के आगे से, जाति-सूचक शब्द हटा लिए गए। उन्होंने अपना रसोईया अनुसूचित जाति (जाटव) का रखा। चौधरी चरण सिंह अपने आपमें विरले राजनीतिज्ञ थे। जिन्होंने पार्टी फंड में कभी किसी पूंजीपति का धन स्वीकार नहीं किया। और अपने दम पर बाधाओं को झेलते हुए अपने लक्ष्य की तरफ आगे बढ़ते रहे। वे सत्ता के व्यापारियों से लड़ते हुए उनके दुस्साहस को चुनौती दी। उनके सहयोगी भी किसान मजदूर परिवारों से संबंधित थे। वे कहते थे:
"किसानों ! तुम्हारी एक आंख खेत की मेड़ पर और एक आंख लखनऊ पर होनी चाहिए।"

डॉ. बलभद्र सिंह यादव : 1967 में चौधरी साहब उत्तर प्रदेश की संविद सरकार में मुख्यमंत्री बने। किसान कौमें : यादव, जाट, गुर्जर, कुर्मी, लोधी, गड़रिया आदि को तो, जैसे उनका मजबूत शुभचिंतक नेता मिल गया हो। पर सरकार ज्यादा दिन नहीं चल सकी और 1969 में मध्यावधि चुनाव घोषित हो गए। चौधरी साहब ने भारतीय क्रांति दल नामक पार्टी का गठन किया। उनके साथ मेरे ससुर प्रोफेसर सहदेव सिंह यादव जो 1962 में (प्रसोपा) और 1967 में (संसोपा) से भरथना (इटावा, उ.प्र.), विधानसभा क्षेत्र से विधायक रहे। चौधरी साहब अपनी सभा में प्राय: सामाजिक न्याय की बातें करते थे। इसलिए उनकी सभा में यादवों के अतिरिक्त : नाई, धीवर, चमार, वाल्मीकि आदि जातियों के प्रतिनिधियों को मंच पर बोलने का पूरा समय दिया जाता था।

यादव बिरादरी में तो बच्चे चौधरी साहब का फोटोयुक्त लाकेट पहनकर खुश होते थे। और यदि कोई चौधरी साहब के सम्मान को ठेस पहुंचाने की बात करता, तो वह मरने-मारने पर भी उतारू हो जाते थे। सबसे पहले ग्रामीण महिलाओं के लिए शौचालय की बात चौधरी साहब से सुनी थी। चौधरी चरण सिंह ने 1977 में मोरारजी देसाई मंत्रिमंडल में गृह मंत्री के

पद पर रहते हुए मंडल आयोग के सूत्रधार रहे 1980 में उन्होंने जनता पार्टी टूटने पर अपनी नई पार्टी का नाम 'दलित मजदूर किसान पार्टी' रखा।

दयाराम : यदि किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व की चर्चा ही बंद कर दी जाए, अथवा उस व्यक्ति के व्यक्तित्व पर पर्दा डाल दिया जाए, या फिर उस व्यक्ति के व्यक्तित्व को दुष्प्रचार की भेंट चढ़ा दिया जाए। फिर उस महान व्यक्ति के महान विचार लोगों के सामाजिक जीवन से लुप्त हो जाते हैं। भारत भूमि पर कृषि क्रांति के तीन कोहिनूर हो पैदा हुए : राष्ट्रपिता ज्योतिबा फुले, जिन्होंने भारत के कमेरों को विदेशी लुटेरों से बचाने के लिए "किसान का कोड़ा" पुस्तक लिखी। दीनबंधु सर छोटूराम ने भारत के मूलनिवासी किसान और मजदूरों को जागृत करने के लिए "बेचारा जमींदार" पुस्तक लिखी। चौधरी चरण सिंह अन्य पुस्तकों के साथ-साथ देशवासियों का मार्गदर्शन करने के लिए "भारत की भयावह आर्थिक स्थिति" पुस्तक लिखी। राष्ट्रपिता ज्योतिबा फुले और चौधरी सर छोटूराम यदि परतंत्र भारत में सामाजिक चेतना के सूत्रधार रहे। तो स्वतंत्र भारत में चौधरी चरण सिंह, जिनका जन्म मूलनिवासी बहुजन समाज के अन्य पिछड़ा वर्ग में हुआ, वे राजनीतिक चेतना के सूत्रधार रहे।

चौधरी ब्रह्मप्रकाश यादव 1952 से लेकर 1955 तक, दिल्ली राज्य के प्रथम मुख्यमंत्री रहे। उन्होंने पिछड़ी, अनुसूचित जाति जनजाति एवं अल्पसंख्यक वर्ग का एक सामाजिक संगठन बनाया। जिससे चौधरी चरण सिंह उनसे काफी प्रभावित थे, और उन्होंने 1954 में चौधरी ब्रह्मप्रकाश यादव, दिल्ली, को बतौर मुख्य अतिथि लखनऊ में हो रहे पिछड़े वर्ग सम्मेलन में आमंत्रित किया। और चौधरी चरण सिंह इस पिछड़े वर्ग सम्मेलन के संयोजक रहे।

उत्तर प्रदेश के जनपद जौनपुर में एससी, एसटी, ओबीसी और अल्पसंख्यक समाज के लोगों के प्रयास से न्यायालय परिसर में बाबासाहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर की प्रतिमा को स्थापित हो गई। किंतु उसके अनावरण पर विवाद छिड़ गया। सर्वसम्मति से तय किया गया कि पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह मूर्ति का अनावरण करेंगे। सवर्णों को इस बात का भय सता रहा था, कि चौधरी चरण सिंह द्वारा मूर्ति अनावरण करने पर कहीं sc.st.obc और अल्पसंख्यकों का गठबंधन मजबूत न हो जाए, जो सवर्णों के राजनीतिक भविष्य के लिए चुनौती बन जाएगा। किंतु मूलनिवासी बहुजन समाज के दबंग नेता पारसनाथ मौर्य एवं

उनके मूलनिवासी साथियों के सहयोग से डॉ. अंबेडकर की मूर्ति का अनावरण एवं माल्यार्पण चौधरी चरण सिंह से ही करवाया गया।

विक्रम सिंह पंवार : 1937 में मूलनिवासी बहुजन समाज के कुछ नेताओं को विधानसभा चुनाव में बहुत बड़ी सफलता मिली। इनमें चौधरी चरण सिंह को उत्तर प्रदेश में, चौधरी सर छोटूराम को पंजाब में, और डॉ. अंबेडकर को मुंबई प्रेसीडेंसी और सेंट्रल प्रोविंस में भारी सफलता मिली।

चौधरी चरण सिंह 1937 में जब विधायक बने, तो उन्होंने सबसे पहले "लैंड यूटिलाइजेशन बिल" का प्रारूप तैयार किया। इस प्रारूप की विशेषता यह थी, कि भूमि के समुचित उपयोग के लिए आवश्यक यह है, "कि जो व्यक्ति जमीन को जोड़ता है, उसको ही भूमि का मालिक बना दिया जाए।" किंतु शासक जातियों ने "लैंड यूटिलाइजेशन बिल" के प्रारूप को सदन में पेश ही नहीं होने दिया। लेकिन चौधरी चरण सिंह गरीब जनता के लाडले जरुर बन गए।

चौधरी चरण सिंह अक्सर कहते थे : किसानों ! मुझे खेद के साथ कहना पड़ रहा है, कि गांव वालों को सिर्फ वोट देने का अधिकार है। इसके अतिरिक्त उनका कोई अधिकार नहीं माना गया। हम ऐसी स्थिति को बदल देंगे। गांव का आदमी जाग गया है और उसे दिल्ली आने का रास्ता भी मालूम हो गया है।

उन्होंने उत्तर प्रदेश में जमींदारी उन्मूलन कानून 1952 में पास किया। बिखरे हुए खेतों को एक जगह लाकर सिंचाई का समुचित प्रबंध-कर किसानों को अच्छी फसल उगाने हेतु, चकबंदी कानून पास कर उसे अमल में लाने का प्रयास किया। जिन भूमिहीन खेतिहर मजदूरों के पास जमीन नहीं थी, जो जमींदारों के खेत सिकमी और सीर पर जोतते थे, उन्होंने भूमिहीन मजदूरों और किसानों को उनकी सिकमी और सीर की जमीन को, जिसका वह लगान देते थे, उन्हें भूमिधर घोषित कर उन जमीनों पर मालिकाना हक प्रदान किया। बड़े-बड़े जमीदारों की भूमि पर सीलिंग एक्ट लागू कर, सेलिंग में निकली भूमि को गरीबों में बांट दिया।

चौधरी चरण सिंह ने ही सर्वप्रथम लोक सेवा आयोग में अनुसूचित जाति के सदस्य रूप में नियुक्ति का प्रावधान किया। सरकार का मनोबल तोड़ने और सरकारी कार्य ठप करने के लिए, पटवारियों ने इस्तीफा दे दिया। चौधरी चरण सिंह ने उनके त्यागपत्र मंजूर-कर उन्हें

अदालत में जाने लायक भी नहीं छोड़ा। चौधरी चरण सिंह ने उन्हें बर्खास्त कर, रिक्त पदों का ज्ञापन निकालकर, सभी वर्गों के लोगों को प्रतिनिधित्व प्रदान किया।

राजेंद्र सिंह अपनी पुस्तक में उनकी खुशी का वर्णन करते हुए लिखा, गृह मंत्री बने एक-दो दिन ही हुए थे। कि उनके निवास पर एक सज्जन मिलने आए। चौधरी साहब ने पूछा, 'कहो, कैसे आना हुआ? वह सज्जन बोला, 'काम कुछ नहीं था, सिर्फ आप के दर्शन करने आए हैं'। चौधरी साहब की जैसी आदत थी बोले, 'मैं कोई देवता तो हूं नहीं, क्यों खर्च किया? सज्जन बोले, 'हमारे लिए तो आप देवता ही हो। मेरी लड़की कॉलेज पढ़ने जाती थी, पिछले दिनों इतनी गुंडागर्दी बढ़ गई कि, कोई अनुशासन ही नहीं रहा। मैंने अपनी बेटी को घर में ही बैठा दिया। आप के गृह मंत्री बनते ही गुंडागर्दी समाप्त हो गई। अब तो प्राचार्य ने विश्वास दिलाया है, कि बदमाशी नहीं होने दी जाएगी। तब मैंने लड़की को कालेज भेजना शुरू कर दिया। तभी सोचा आप के दर्शन करके आऊंगा।' चौधरी साहब मुस्कुराए, इतना ही कह सके, 'अभी तो मैंने कुछ किया ही नहीं है'।

चौधरी चरण सिंह के अनुसार, 'केवल किसी जाति में पैदा हो जाने के कारण जो घृणा का व्यवहार और अपमानजनक भेदभाव किसी व्यक्ति से जुड़ जाता है, वहीं इस बात का कारण बना है, कि व्यापक स्तर पर लोगों ने उन्हें (हिंदू धर्म को) छोड़-छोड़कर दूसरे धर्मों को अपनाने को विवश कर दिया। सिर्फ अछूत ही नहीं, बल्कि अन्य लोगों ने भी ऐसा किया है। मसलन पंजाब में केवल 40 वर्षों के अंदर, यानी 18 91 से 1937 तक 56% लोगों ने, जो जाट थे, यह देखकर, कि उनके धर्म के लोग उन्हें हिकारत की नजरों से देखते हैं। जबकि इसका कोई नैतिक आधार नहीं है। अपने तथाकथित पुरखों की परंपरा पर लानत भेजकर छुटकारा पा लिया।

चौधरी चरण सिंह ने जातीय भेदभाव का खुलासा करते हुए आगे कहा, 'यदि मैं ब्राह्मण कुल में जन्म लेता, और वह भी कश्मीरी पंडितों के घर में, तो कभी का प्रधानमंत्री बन जाता। लेकिन मेरा दुर्भाग्य है कि मैं जाट के घर जन्मा, और मेरी इस वेदना को कलम के पंडितों ने, कुर्सी के भूखे दलालों ने, मजाक के रूप ले लिया। और मुझे रातों-रात जातिवादी करार दिया।

सामाजिक विषमता की बुनियाद पर आर्थिक विषमता की झोपड़ी खड़ी की गई है। ऐसी भयावह स्थिति का जिम्मेदार ब्राह्मणवाद है। ब्राह्मणवादी व्यवस्था ने देश में सामाजिक

व्यवस्था से पीड़ित लोगों की कैसी दुर्दशा कर डाली है, चौधरी चरण सिंह उसका वर्णन करते हुए कहते हैं : 'मजदूर अपने दिन भर के संघर्ष से अधिक थक जाता है। वह दिन निकलते ही निराशा से अपना काम शुरू करता है, और सोते समय भी निराशा ही रहती है। वह अपनी व्यथा बताता है, 'साहब एक मुट्ठी चना, थोड़ी सी प्याज और नमक से हम अपना गुजारा कर सकते हैं। यही वह सब कुछ है जिसकी आवश्यकता उसे स्वस्थ रहने के लिए होती है। लेकिन क्या इन लोगों को अपने शरीर को स्वस्थ रखने के लिए यह थोड़ा आहार भी मिल पाता है? और क्या वे अपनी पत्नी और बच्चों के लिए कुछ भी बचा लेते हैं? इस प्रश्न का उत्तर स्पष्ट रूप से है, नहीं। वह मजदूर आगे बोलता है, 'साहब कहने से क्या फायदा, मेरे बीवी बच्चे अक्सर भूखे पेट सो जाते हैं।' इस तरह एक मजदूर अपनी दुर्दशा को बयान करता है। हमारा क्या कसूर है, यही कि हम गरीब पैदा हुए हैं। वास्तव में इसमें किसी का कोई दोष नहीं है। उस मजदूर का झुर्रीदार चेहरा और आंसू भरी आंखें, उसकी पत्नी के लिए भोजन और उसके बच्चों के लिए संतोष है। क्या हम इंसान नहीं हैं?"

चौधरी चरण सिंह जापान के खाद्यान्न उत्पादन पर बताते हैं, 'यद्यपि जापान में खेती करने वाले परिवार के पास औसतन कृषि योग्य भूमि अन्य देशों की अपेक्षा सबसे कम है। अर्थात 3 एकड़ से भी कम है। किंतु यह देखा गया है कि जापान की भूमि के प्रति यूनिट का उत्पादन इंग्लैंड की अपेक्षा 4 गुना, अमेरिका की अपेक्षा 10 गुना, और रूस की अपेक्षा 16 गुना है।

हमेशा किसानों के साथ भेदभाव होता रहा है। जबकि वह भी अन्य लोगों की तरह भारत के नागरिक हैं। प्रश्न यह है कि अन्य लोगों की तरह किसानों पर वही मापदंड क्यों लागू नहीं होता, यदि उनको भारत का समान नागरिक माना जाता है। लेकिन यह ठोस तर्क सरकार को स्वीकार नहीं है। क्योंकि यदि उन्होंने यह स्वीकार कर लिया, तो 90% से अधिक कृषि परिवारों को किसी भी प्रकार से प्रत्यक्ष करों से छुटकारा मिल जाएगा। इसलिए उनके साथ अन्य प्रकार का व्यवहार किया जाता है, और उन्हें निम्न प्रकार का नागरिक समझा जाता है। तथा चाहे वे अपनी गुजर-बसर न कर पाएं, फिर भी उनसे 'ऐंठकर कर' ले लिया जाता है। भारत में कमेरा अपने श्रम से खाद्यान्न उत्पादन करता है, और लुटेरा बिना श्रम के ही उसका उपभोग करता है।

कृषि पर ही बहुत से उद्योग धंधे निर्भर हैं। कृषि से कपास का उत्पादन होता है। कपास के उत्पादन से सूती मिलें लगाई जाती हैं। कृषि से जंगल, जंगल से लकड़ी का उत्पादन होता है। और लकड़ी की बस्तुओं से उद्योग लगाए जा सकते हैं। कृषि कार्य में ही पशुपालन आता है। दुग्ध उत्पादन से डेयरी फार्म द्वारा, दूध घी मक्खन आदि तैयार कर लोगों को रोजगार प्रदान किया जा सकता है। भूमि की उपयोगिता कार्यों के भिन्न-भिन्न पहलुओं की पूर्ति की जा सकती है। यह भी सत्य है कि औद्योगिकीकरण की आवश्यकता है, यदि हम अपनी जनता के स्तर को ऊंचा करना चाहे। लेकिन औद्योगिकीकरण तभी हो सकेगा और इसके फलस्वरुप हमारे रहन-सहन का स्तर उस सीमा तक ऊंचा होगा, जब तक हम कामगारों से को उठाकर कृषित्तर व्यवसाय में लगा सकेंगे। और यह परिवर्तन तभी हो सकता है जब कृषि उत्पादन में वृद्धि हो। और कृषि उत्पादन दरों की आवश्यकता से अधिक अन्न पैदा होने लगे। इस प्रकार कृषि उत्पादन की वृद्धि से स्पष्ट है, और यह सिद्ध भी हो चुका है, कि यही देश समृद्धि का प्रमुख कारण है। केवल इतना ही नहीं, बल्कि कृषि के सहारे औद्योगिकरण अधिक होगा, जिसके फलस्वरूप हमारे कामगारों को नए रोजगार भी मिलेंगे।

बी.डी. बोरकर : चौधरी चरण सिंह का जन्म 23 दिसंबर 1902 को मेरठ जनपद के नूरपुर गांव में एक गरीब किसान परिवार में हुआ था। उन्होंने 1923 में बीएससी और 1926 में कानून की डिग्री प्राप्त की। 1928 में उन्होंने कानून के प्रैक्टिस शुरू की। यद्यपि वे कांग्रेस और आर्य समाज में थे, तो भी उन्होंने अपना आदर्श मानने में, कबीर को, गांधी और दयानंद सरस्वती की तुलना में अधिक प्राथमिकता दी। कांग्रेस के टिकट पर भी 1937 में पहली बार विधायक निर्वाचित हुए। किसान परिवार से ताल्लुक रखने कारण वे जमीदारों द्वारा किसानों के प्रति किए जाने वाले व्यवहार से भलीभांति परिचित थे। इसलिए 1937 में उन्होंने 'भूमि उपभोग अधिनियम' ड्राफ्ट किया। परंतु ब्राह्मण वर्चस्व वाली कांग्रेस ने कभी भी इस बिल को असेंबली में पहुंचने ही नहीं दिया।

गोविंद बल्लभ पंत की कैबिनेट में वे 1952 से 1954 तक राजस्व मंत्री रहे। उन्होंने अधिनियम के प्रभावी क्रियान्वयन पर निगाह रखी और यह सुनिश्चित किया कि जमीदारों से अतिरिक्त जमीन लेकर किसानों के बीच वितरित की जाए। वह किसान जो अधिकांशतया अनुसूचित जाति, अन्य पिछड़ा वर्ग तथा मुसलमान थे, के मध्य अत्यंत लोकप्रिय हो गए थे। उनकी ख्याति को कम करने के लिए ब्राह्मणों ने उन्हें जातीय नेता के

तौर पर स्थापित करना शुरू कर दिया। 1967 में उन्होंने 'भारतीय क्रांति दल' की स्थापना की और चुनाव लड़कर 98 सीटें प्राप्त की। फिर से उन्होंने समाजवादियों एवं अन्य गैर कांग्रेसी दलों के सहयोग से सरकार बनाई।

1948 में बाबा साहेब डॉक्टर भीमराव अंबेडकर की प्रसिद्ध सलाह को ध्यान में रखते हुए, कि उत्तर प्रदेश में राजनीतिक शक्ति जो कि वयस्क मताधिकार के कारण स्वाभाविक रूप से, अनुसूचित जाति और अन्य पिछड़े वर्ग के पक्ष में है, प्राप्त करने के लिए दोनों को साथ आना चाहिए। चौधरी चरण सिंह ने किसानों और मजदूरों को सलाह दी, कि दोनों को अपनी समस्याएं दूर करने के लिए साथ में आना होगा।

राष्ट्रीय राजनीति में गृह मंत्री तथा वित्त मंत्री के पद तक पहुंचे। 28 जुलाई 1979 को वह भारत के प्रधानमंत्री बने और 14 जनवरी 1980 तक पद पर बने रहे। उन्होंने संसद का सामना नहीं किया। क्योंकि वह इस बात को जानते थे, कि इंदिरा गांधी नीति और ब्राह्मण वर्चस्व वाली कांग्रेस संसद पटल पर कभी भी उनका साथ नहीं देगी।

वे जातिवाद का शिकार हुए। अनुसूचित जाति के लोग ब्राह्मणों के बनाए जाल में फंस गए और चौधरी चरण सिंह को सही मायने में समझ ही नहीं पाए। 85 वर्ष की अवस्था में 29 मई 1987 को उनका निर्वाण हो गया।

जब चौधरी चरण सिंह का निधन हुआ। और उनके अनुयायी दिल्ली के राजघाट परिसर में चौधरी चरण सिंह का समाधि स्थल बनाने की पहल की। तो शासक जातियों ने विरोध किया। इसलिए नहीं कि चरण सिंह जाट हैं। बल्कि इसलिए, कि उन्हें मालूम है चौधरी चरण सिंह इतिहास पुरुष न बन जाए। क्योंकि जिस समाज का इतिहास नहीं होता, उसका कोई भविष्य नहीं होता है।

(कृपया इसका प्रिंट निकलवाकर पढ़ें और पढ़वाएं)

-:समाप्त:-

सुगत सांस्कृतिक, शैक्षिक एवं सामाजिक संस्था,
लखनऊ (उ.प्र.), दिनांक : 23.12.2020
अभिनेत्री : अनामिका सिंह
लेखक: ए. के. सिंह
मोबाइल : 7355175480